तपस्य् एव मनो दधे· (Pottius apte, ut mihi videtur, confert gr. ἀνώγω; v. sq.)

c. अनु praef. अभि 1) mandare, jubere. In. 4.14.: तव शक्राभ्यनुज्ञातः पादाव् अद्य प्रपद्यताम्; 5.49.: तव पित्रा 'भ्यनुज्ञाताम् ... यस्मान् मान् ना 'भिनन्देथाः· 2) dimittere. In. 5.29.: तव पित्रा 'भ्यनुज्ञाता गताः स्वं स्वङ् गृहं सुराः - *Caus.* 35.: जग्मतुश्च यथाकामम् अनुज्ञाप्य परस्परम्·

c. अनु praef. सम् 1) permittere. N. 6.7.: अस्माभिः समनुज्ञाते दमयन्त्या नलो वृतः· 2) mandare, jubere. In. 5.34.: ततो ऽहं समनुज्ञाता तेन पित्राच ते ऽनघ· 3) dimittere. Su. 2.2.: सुहृद्भिः समनुज्ञातौ·

c. अभि 1) *i.q. simpl.* N. 20.14.: अहं हि ना 'भिजानामि भवेद् एवन् न वे 'ति वा; 21.21.: ना 'भिजज्ञे स नृपतिर् दुहित्रर्थे समागतम्; N. 5.11.: ना भ्यजानान् नलन् नृपम्; 13.73.: सैरन्ध्रीम् अभिजानीष·

c. अभि praef. सम् agnoscere, cognoscere, *erkennen*. N. 23.24.: इन्द्रसेनां सह भ्रात्रा समभिज्ञाय·

c. अव spernere. Bh. 2.19.: अवज्ञाताच लोकेषु; Bh. 9.11.: अवजानन्ति माम् मूढा मानुषीन् तनुम् आश्रितम्·

c. आ percipere, cognoscere. In. 3.1.: शक्रस्य मतम् आज्ञाय; H. 2.16.: भ्रातुर् वचनम् आज्ञाय· - *Caus.* jubere. In. 5.20.: किम् आज्ञापयसि देवि· Su. 2.1.

c. आ praef. सम् *Caus.* jubere, *c. acc. pers. et loc. rei.* Ragh. 16.75.: समज्ञापयद् आशु सर्वान् आनायिनस् तद्विचये·

c. परि cognoscere, animadvertere, observare. Hit. 18.21.: व्यवहारम् परिज्ञाय वध्यः पूज्यो ऽथ वा भवेत्; 20.14.: तद् परिज्ञाय मार्जारः ... पलायितः; Man. 8.126.

c. प्र cognoscere, animadvertere, cernere, discernere. R. III. 52.33.: अहो तम इवे 'दं स्यान् न प्रज्ञायेत किञ्चन। राजा चेन् न भवेल् लोके; N. 17.3.: दमयन्त्या गतः सार्द्धन् (नलः) न प्राज्ञायत कर्हिचित्; Bh. 11.31.: न प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्; 18.31.: धर्मम् अधर्मञ्च ... अयथावत् प्रजानाति· - स्त्रियम् प्रज्ञातुम् cum feminâ concumbere. Mah. 1.2471.: नच स्त्रियम् प्रजानाति कश्चिद् अप्राप्तयौवनः·

c. प्रति 1) *p.* consentire, assentire. N. 19.10.: प्रतिज्ञानामि ते वाक्यङ् गमिष्यामि नराधिप; Su. 3.22.: सा तथे 'ति प्रतिज्ञाय· 2) *p.* praestare *alqd.* spondere *de alquâ re.* R. Schl. I. 55.13.: ब्रह्मन् न प्रतिजानीमो नास्तिको जायते जनः· 3) *a.* polliceri. A. 5.8.: प्रतिज्ञानीष्व तङ् (गुर्वर्थम्) कर्तुम्; Bh. 18.65.: माम् एवै 'ष्यसि सत्यन् ते प्रतिज्ञाने; Mah. 1.7234.: प्रतिज्ञेच राज्याय द्रुपदो वदताम् वरः; R. Schl. I. 1.61.: प्रतिज्ञातश्च रामेण तदा बालिवधम् प्रति· 4) *a.* confiteri. Bh. 3.31.: कौन्तेय प्रतिज्ञानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति·

c. वि scire, cognoscere, intelligere, percipere, dignoscere. N. 12.75.124.: मानुषीम् माम् विजानीत; Bh. 2.19.: य एनम् वेत्ति हन्तारं यश्चै 'नम् मन्यते हतम्। उभौ तौ न विजानीतः; 4.4.: कथम् एतद् विजानीयाम् «quomodo istud intelligam»; In. 4.1.: पार्थस्य चक्षुर् उर्वश्यां सक्तम् विज्ञाय; N. 8.6.: विज्ञाय नलशासनम्; H. 1.3.: विज्ञाय निशि पन्थानम्; 6.: दिशश्च न विजानीमः· - *Caus.* facere ut sciat, cognoscat *alqs*, nuntiare. Ragh. 5.20.: समाप्तविद्येन मया महर्षिर् विज्ञापितो ऽभूद् गुरुदक्षिणायै; 14.60.

ज्ञाति *m.* (r. ज्ञा s. ति) cognatus, propinquus (*). H. 1.39. 41. N. 9.35. 16.37. (Goth. *knô-ds*, Th. *knô-di* f., genus.)

ज्ञान *n.* (r. ज्ञा s. अन) 1) scientia. N. 20.8. Bh. 3.3.41.8. 2. 2) mens, intellectus. N. 10.25. A. 8.16.

ज्ञानवत् (a praec. s. वत्) scientiâ praeditus. Bh. 10.38.

ज्ञानिन् (a ज्ञान s. इन्) *id.* Bh. 3.39. 6.46.

ज्या 9. *p.* जिनामि, gr. 386. (जरायाम्) tabescere, senescere; cf. जै.

ज्या *f.* nervus arcûs. (Cf. gr. βιός, v. जीव्.)

ज्यायस् (gr. 251.) 1) natu major. 2) melior. Bh. 3.1.8. 3) peregregius, optimus. Ragh. 18.33.

ज्यु 1. *a.* (गत्याम्) ire; cf. द्रु, कु.

ज्युत् 1. *p. a.* lucere, fulgere. In. 1.32.: ज्योतते पावकः -

---

(*) Wils.: *A distant Kinsman, one who does not participate in the oblations of food or water offered to deceased ancestors.*